डेविड
लिविंगस्टोन

डेविड लिविंगस्टोन

लिविंगस्टोन एक मिशनरी बन कर अफ्रीका गए थे। जब अफ्रीकी लोगों का धर्मान्तरण करने में उन्हें मुश्किलें आईं, तो उन्होंने खोज-यात्री बनने का निश्चय किया। उन्हें लगा कि व्यापारियों के लिए अफ्रीका के रास्ते खोल कर शायद गुलामों का व्यापार समाप्त किया जा सकता है। उनकी यात्राओं के समाचारों ने इंग्लैंड में उन्हें एक प्रसिद्ध व्यक्ति बना दिया था। लेकिन फिर भी उनका खोज-कार्य बहुत सफल नहीं हुआ, और वे नील नदी का स्रोत नहीं खोज सके। इसके बावजूद वह इतिहास के सबसे प्रसिद्ध खोजियों में एक माने जाते हैं।

बहुत कम ही महान व्यक्ति ऐसे हुए हैं जिनके जीवन की शुरुआत इतनी मुश्किलों भरी रही होगी। उनका जन्म १८१३ में ग्लासगो के निकट हुआ था, और उनके माता-पिता इतने गरीब थे कि उनका सात लोगों का परिवार मात्र एक कमरे के घर में रहता था। डेविड जब केवल दस साल के थे, उन्हें नज़दीक की कपडा मिल में मज़दूरी के लिए भेजा गया। उन्हें सुबह छह बजे से रात आठ बजे तक कमरतोड़ परिश्रम करना पड़ता था। केवल रविवार को छुट्टी होती थी। मिल में बहुत गर्मी होती थी, और छोटे लड़कों का काम था यह देखना कि कोई भी सूत का धागा टूटने न पाए। इस काम में उन्हें खतरनाक मशीनों के इर्द-गिर्द झुक-झुक कर चलना और रेंगना पड़ता था। यदि वे कोई गलती करते तो उनकी पिटाई होती थी।

इतनी छोटी उम्र में, और इतने ख़राब हालातों में भी, डेविड ने दिखाया कि उसके इरादे कितने मज़बूत हैं। यह वाकई चौंकाने वाली बात थी, कि दिन-भर इतनी कड़ी मेहनत करने के बाद भी कोई बच्चा स्कूल जाना चाहेगा। लेकिन डेविड ऐसा ही करता, और फिर घर लौट कर आधी रात तक पढाई करता। इस प्रकार उसने पढ़ना और लिखना सीखा। यहाँ तक कि उसने लैटिन भाषा भी सीखनी शुरू कर दी।

इक्कीस बर्ष की आयु तक पहुँचते पहुँचते लिविंगस्टोन स्वयं-शिक्षित हो चुका था। उसके पिता द्वारा दी गई गहरी धार्मिक प्रवृत्तियों ने भी उसे शिक्षा पाने के लिए प्रेरित किया। उसके जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण तब आया जब उसने एक विज्ञापन देखा जिसमें मिशनरी डॉक्टरों को चीन जाकर काम करने का आवाहन किया गया था। उसने निश्चय किया कि यही उसके लिए उपयुक्त कार्य है।

मिशनरी बनने से पहले लिविंगस्टोन को ग्लासगो विश्वविद्यालय से डॉक्टरी की पढाई करनी थी। उसके बाद लंदन मिशनरी सोसाइटी ने उसे मिशनरी कार्य का प्रशिक्षण दिया। सन १८४० तक उसकी तैयारी पूरी हो चुकी थी। लेकिन उसी वर्ष चीन और ब्रिटेन के बीच अफीम-युद्ध शुरू हो गया, और वह चीन न जा सका। लेकिन रॉबर्ट मॉफट नाम के एक प्रसिद्ध मिशनरी से मुलाकात से प्रेरित हो कर उसने अफ्रीका जाने का निश्चय किया। और इस प्रकार अपने मन में अनेकों संकल्प लिए वह मैली-कुचैली बस्ती का अपना घर सदा के लिए छोड़ कर केप टाउन जाने वाले जहाज़ पर सवार हो गया।

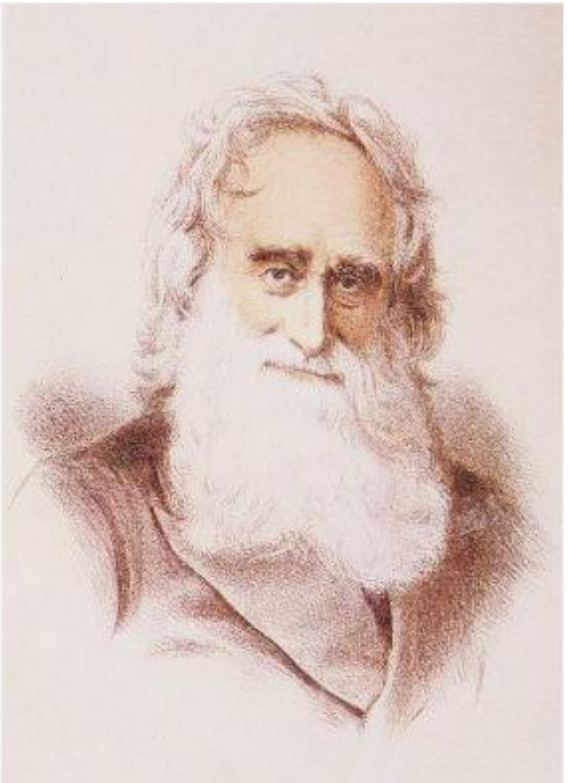

रॉबर्ट मॉफट का एक चित्र, जिसने लिविंगस्टोन को अफ्रीका जाकर मिशनरी कार्य करने की प्रेरणा दी।

अफ्रीका पार करने वाला पहला अँगरेज़

अंततः जब वह केप टाउन से ९६० कि.मी. दूर उत्तर में स्थित अपने गंतव्य कुरुमान पहुँचा तो बड़ा स्तंभित हुआ। उसने देखा कि मॉफट के लगभग २० वर्ष वहां रहने के बावजूद वहां के किसी भी मूल निवासी ने ईसाई धर्म स्वीकार नहीं किया था। और वह एक शहर नहीं बल्कि एक छोटा और मलिन सा गांव था।

अगले तीन वर्षों में लिविंगस्टोन ने कई बार उत्तर में स्थित इलाकों का भ्रमण किया और दूर-दराज़ के वहां के निवासियों के धर्म-परिवर्तन की कोशिश की, लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। लेकिन इस अनुभव के द्वारा वह अफ्रीका निवासियों के चरित्र को औरों के मुकाबले कहीं अधिक अच्छी प्रकार समझ सका, और अंततः उसने मिशनरी कार्य करने का अपना विचार त्याग ही दिया। उसे लगा कि उसे अफ्रीका के उन क्षेत्रों को खोज करनी चाहिए जहाँ अँगरेज़ अब तक नहीं पहुंच पाए थे। यदि अँगरेज़ व्यापारी इन इलाकों में अपनी पैठ बना कर वहाँ बस जाएँ, तो अफ़्रीकी गुलामों की खरीद-फरोख्त बंद हो जाएगी।

उसकी इस योजना में देरी हो गई क्योंकि एक शेर ने उस पर हमला कर दिया और उसे बुरी तरह घायल कर दिया। वह जल्दी ही स्वस्थ हो गया, लेकिन उसके बाद उसकी बाईं भुजा सदा के लिए कमज़ोर हो गई। इसी समय उसका रिश्ता मॉफट के बेटी मैरी के साथ हो गया। यह कोई प्रेम विवाह नहीं था, लेकिन मैरी मिशनरी जीवन से वाकिफ थी, और लिविंगस्टोन के अकेलेपन में उसकी अच्छी जीवन संगिनी बन सकती थी।

अफ्रीका आगमन....
वहां के मूलनिवासियों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने में असफलता ....
मध्य अफ्रीका में भ्रमण की इच्छा.....
एक शेर का आक्रमण.....
नगामी झील की खोज.....
परिवार को इंग्लैंड वापस भेजना.....
ज़ंबेसी नदी में भ्रमण और खोजकार्य .....
विक्टोरिया प्रपात की खोज .....
पूरे अफ्रीका को पार करना .....
इंग्लैंड को वापसी ....
लंदन सोसाइटी द्वारा सम्मान व आवभगत .....
परिवार को समय न देना .....

अपने मिशनरी कार्य में कोई सफलता न मिलने के कारण लिविंगस्टोन को वेचैनी होने लगी। जब उसे पता चला कि उत्तर दिशा में एक बड़ी झील है, तो वह तुरंत वहां जाने के लिए एक अभियान की तैयारी करने लगा। १८४९ में उसने कालाहारी रेगिस्तान के मध्य अपनी पहली यात्रा की, और उस झील तक पहुँच गया, जिसका नाम वहां के निवासियों ने नगामी झील रखा था।

यह कोई बहुत बड़ी खोज नहीं थी, लेकिन लिविंगस्टोन को विश्वास हो गया था कि उत्तर दिशा में और आगे अवश्य कोई बहुत बड़ी नदी है। उसे लगा कि यह नदी यूरोप के व्यापारियों को मध्य अफ्रीका में आकर्षित करने का एक आदर्श माध्यम बन सकती है, और उस पर इस नदी को खोज निकालने का जूनून सवार हो गया।

इस समय तक उसने अपने परिवार की परवाह करना लगभग छोड़ ही दिया था, और केवल अफ्रीका के बारे में ही सोचता रहता था। उसने परिवार को वापस इंग्लैंड भेज दिया, जहाँ न उनके पास घर था, और न ही पैसा, लेकिन कम से कम वे मलेरिया बुखार से सुरक्षित थे। फिर अंततः उसने उस नदी को खोज ही निकाला, जिसका नाम ज़ंबेसी था, और लिआयान्ति पर अपना नया ठिकाना बना लिया। इस खोज से अत्यंत उत्साहित होकर वह नदी में आगे खोज अभियान पर चल पड़ा।

नगामी झील पर लिविंगस्टोन का आगमन। इसकी खोज ने उसे अपने खोज अभियान आगे जारी रखने के लिए प्रेरित किया।

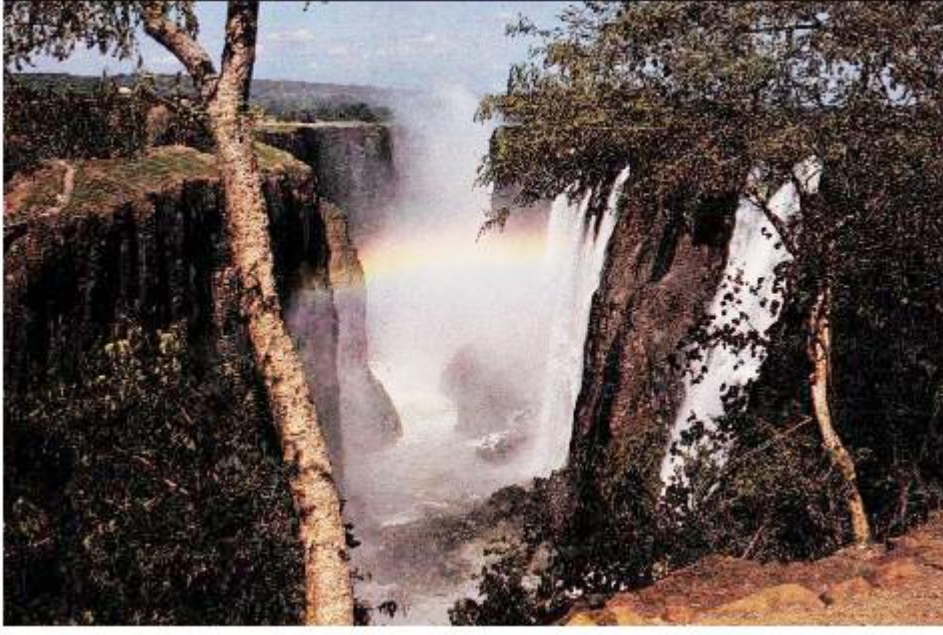

विक्टोरिया प्रपात का विहंगम दृश्य। लिविंगस्टोन ने इसकी खोज जंबासी नदी की अपनी यात्रा के दौरान की थी।

आदिवासियों की एक छोटी टोली को साथ लेकर वह पश्चिम की ओर चला, और बीहड़ जंगलों, खूंखार कबीलों, मलेरिया, दस्त आदि खतरों से लड़ता हुआ, छः माह बाद अंततः अटलांटिक महासागर के तट पर पहुँच गया।

इंग्लैंड का हीरो

लिविंगस्टोन ने शीघ्र ही यह महसूस किया कि मध्य अफ्रीका पहुँचने का यह रास्ता व्यापारियों के लिए बहुत खतरों भरा है। इसलिए, अपनी कठिन बीमारी से उबरने के बाद वह लिनयन्ती को लौट गया, और नदी के रास्ते पूर्वी तट की ओर चला। रास्ते में उसे एक बहुत विशाल और मंत्रमुग्ध कर देने वाला जल प्रपात मिला, जिसे उसने विक्टोरिया फाल्स का नाम दिया। उसकी निगाह में नौका द्वारा नदी के रास्ते मध्य अफ्रीका पहुँचने में यह जल-प्रपात ही एक मुख्य बाधा थी। १८५६ तक उसने पूरे महाद्वीप की यात्रा कर ली थी, और ऐसा करने वाला वह पहला अँगरेज़ व्यक्ति था।

लिविंगस्टोन ने अपनी खोज-यात्राओं के दौरान बहुत से खतरों का सामना किया। यहाँ एक दरियाई घोड़ा उसकी नाव को पलटने की कोशिश कर रहा है।

समुद्र तट पर पहुँचने पर लिविंगस्टोन ने देखा कि शाही नौसेना का एक जहाज़ उसे इंग्लैंड ले जाने के लिए भेजा गया है। इंग्लैंड के लोगों की नज़रों में वह एक महान व्यक्ति बन चुका था। उसके बारे में बहुत सी ऐसी बातें लिखी गईं जो सही नहीं थीं, जैसे कि उसने बहुत से अफ्रीकियों का धर्म-परिवर्तन कर उन्हें ईसाई बनाया था। इन बातों के कारण लोग उसे महान संत के रूप में देखने लगे थे।

लंदन पहुँचने पर उसके लिए अनेक भोज आयोजित किये गए, और उसे अनेक पुरस्कारों और पदकों से सम्मानित किया गया। जब भी वह सड़क पर निकलता, लोग तुरंत उसे पहचान लेते। दुःख की बात यह थी कि वह बेहाली में जी रहे अपने परिवार के लिए अब भीअधिक समय नहीं निकाल सका।

ज़ंबेसी अभियान की असफलता

लिविंगस्टोन द्वारा ज़ंबेसी का अभियान .....
प्रारम्भ से ही मुश्किलें .....
नदी की तेज़ धाराओं के कारण योजना में बदलाव .....
शीरे नदी की खोज-यात्रा .....
न्यासा झील की खोज .....
मलेरिया से मिशनरियों की मृत्यु ....
पत्नी का देहांत ....
अभियान बीच में ही छोड़ना पड़ा ....
इंग्लैंड को वापसी ....
बाथ में बर्टन की गोष्ठी में शिरकत ....
नील नदी का स्रोत खोजने के लिए एक और अभियान का न्योता ....
स्रोत के अल्बर्ट झील के दक्षिण में होने का विश्वास ....

जल्दी ही लिविंगस्टोन फिर से वापस अफ्रीका लौट गया। ब्रिटिश सरकार को उसकी इस योजना में काफी रूचि थी कि ज़ंबेसी नदी से होकर एक व्यापार मार्ग खोला जाये, और उत्तर के उच्चवर्ती उपजाऊ इलाकों में गोरे लोगों की एक बस्ती बसाई जाये। उन्होंने लिविंगस्टोन को ब्रिटिश सरकार का भ्रमणशील राजदूत नियुक्त कर दिया, और उसे उस अभियान का नायक बना दिया जिसमें एक स्टीमर से यात्रा करके नदी किनारे के बस्ती बसाने योग्य इलाकों की खोज की जानी थी।

१८५८ में लिविंगस्टोन अपनी पत्नी और सात अन्य यूरोपियन लोगों के साथ इस अभियान पर निकल पड़ा। लेकिन शुरू से ही इस यात्रा में मुश्किलें और विपदाएं आने लगीं। उस छोटे से स्टीमर की रफ़्तार बहुत कम थी, वह खचाखच भरा हुआ था, और उसे चलाने के लिए बहुत अधिक ईंधन की आवश्यकता पड़ रही थी। और फिर अभियान के नाविक मलेरिया और पेचिश से ग्रस्त हो गए। लिविंगस्टोन भी कोई अच्छा नायक सिद्ध नहीं हुआ। वह अपनी गलतियां स्वीकार करने को तैयार नहीं था, और उसे अपने बीमार नाविकों से कोई हमदर्दी नहीं थी। अंततः उसने सबसे बात करना ही बंद कर दिया।

लिविंगस्टोन का एक चित्र। अफ्रीका में उसकी सफलताओं ने उसे लगभग एक महा-नायक का दर्जा दे दिया।

बिशप मैकेंज़ी का एक फोटो जो उसके मिशनरी कार्य के लिए इंग्लैंड से अफ्रीका जाने से पहले लिया गया था।

उससे भी बुरा यह हुआ कि आगे आने वाली मुश्किलों के लिए उसने कोई तैयारी नहीं की थी। उसने मलेरिया के खतरे के बारे में सोचा ही नहीं। और वह यह देख कर घबरा गया कि समुद्र तट से १००-२०० मील की दूरी पर तेज़ बहाव के कारण नदी में आगे बढ़ना नामुमकिन था। कोई भी व्यापारी जहाज़ तेज़ बहाव के इस इलाके को पार न कर पाता। हड़बड़ी में लिविंग्सटोन ने अपनी योजना में बदलाव किया, और ज़ंबेसी की एक प्रमुख सहायक नदी "शीरे" के रास्ते चल पड़ा। लेकिन आगे बढ़ने पर पता चला कि यह रास्ता भी तेज़ बहाव के कारण बंद था। ऐसा लगने लगा कि उसके सारे अरमान ध्वस्त हो जायेंगे।

शीरे नदी के खोज अभियान के दौरान लिविंगस्टोन को इस यात्रा की एक बड़ी सफलता मिली। वह विशाल न्यासा झील तक पहुँचने में कामयाब हुआ। लेकिन वहां पहुँचने वाला वह पहला गोरा व्यक्ति नहीं था, क्योंकि पुर्तगालियों ने पहले ही यहाँ गुलामों के व्यापार का एक केंद्र बना रखा था। एक अंतिम प्रयास के रूप में लिविंगस्टोन ने एक स्टीमर को इंग्लैंड से टुकड़ों में मंगाया, जिससे कि उसे तेज़ बहाव के इलाके से पार ले जाने के बाद झील में फिर से जोड़ कर इस्तेमाल किया जा सके।

लिविंगस्टोन अपनी डायरी लिखते हुए, जिसमें उसने अफ्रीका के अपने अभियानों का विस्तृत लेखा-जोखा लिपिबद्ध किया।

भूखे-प्यासे गुलामों को उनके अरब मालिकों ने मरने के लिए छोड़ दिया, क्योंकि वे और चल पाने में असमर्थ थे।

इस बीच उसके चारों ओर दुर्घटनाएं ही दुर्घटनाएं हो रही थीं। लिविंगस्टोन के उत्साह से बल पाकर बिशप मैकेंज़ी भी इंग्लैंड से आ पहुंचे और मिशनरी कार्य के लिए एक केंद्र स्थापित कर लिया। लेकिन वह और उनके साथी जल्दी ही मलेरिया के कारण मृत्यु का ग्रास बन गए। एक लम्बे और अप्रसन्न वैवाहिक जीवन के बाद मैरी लिविंगस्टोन का भी ज्वर के कारण देहांत हो गया। नदी में आगे राह बनाना अब लगभग असंभव लगने लगा था, और साथियों के विद्रोह का डर लगातार बना हुआ था। पहले ही दो यूरोपियन इस्तीफ़ा दे चुके था, और इस बात से क्रुद्ध होकर लिविंगस्टोन ने दो अन्य को भी निकाल बाहर किया था।

आख़िरकार उन्होंने हार मान ली, और अपने अभियान में पूरी तरह असफल होकर वे इंग्लैंड वापस चले गए। इस बार उनका कोई स्वागत-सत्कार नहीं हुआ। अपनी पत्नी की मृत्यु का दुःख झेलने के बाद अब लिविंगस्टोन को पता चला कि उसके बड़े बेटे रॉबर्ट की भी अमेरिकी गृह युद्ध में घायल होने से मृत्यु हो गई है।

लिविंगस्टोन की भूल

लेकिन जल्दी ही उसका पूरा ध्यान और उसकी ऊर्जा एक नए कार्यक्रम पर केंद्रित हो गये। १८६४ में उसने बाथ शहर में एक गोष्ठी में भाग लिया, जिसमें स्पेक और बर्टन नाम के दो व्यक्तियों के बीच नील नदी के स्रोत को लेकर संवाद होना था। स्पेक की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु के कारण नील के स्रोत का यह प्रश्न और भी रहस्यमय हो गया। सर रोडेरिक मुर्चिसन ने लिविंगस्टोन को न्योता दिया कि वह अफ्रीका वापस आकर एक बार फिर इस मसले की तह तक जाने की एक आखिरी कोशिश करे।

लिविंगस्टोन इस विषय में अपनी परिकल्पनाओं पर काम करने लगा। उसे स्पेक की इस बात पर भरोसा नहीं था कि नील नदी विक्टोरिया झील से निकली है। आखिर, क्या सर सैमुअल बेकर हाल ही में यह सिद्ध करके नहीं लौटे थे कि नील नदी अल्बर्ट झील से निकली है? अन्य बहुत से लोगों की तरह लिविंगस्टोन भी यह नहीं मानता था कि ये दोनों झीलें आपस में जुड़ी हुई हैं। उसे विश्वास था कि असल में नील का स्रोत अल्बर्ट झील के दक्षिण में कहीं है, शायद तन्गान्यिका झील में। यह एक ऐसी भूल थी, जो १८७३ में उसकी मौत का कारण बन गयी।

नील के स्रोत की घातक खोज

जंजीबार से न्यासा झील को ओर .....
लिविंगस्टोन को पेचिश हुई .....
तन्गान्यिका झील पर आगमन.....
गुलामों के सौदागर अरबों से मदद स्वीकारना .....
लुअलाबा नदी के नील का स्रोत होने का विश्वास .....
रास्ता बदल कर उजिजि जाने की मजबूरी ....
गुलामों के कत्ले-आम से स्तब्ध.....
स्टैनली से मुलाक़ात ....
सिद्ध करना कि तन्गान्यिका झील नील का स्रोत नहीं है ....
लुअलाबा नदी पर खोज-अभियान की कोशिश के दौरान मृत्यु.....

स्पेक और बर्टन की तरह ही लिविंगस्टोन ने भी अपने यात्रा जंजीबार से प्रारम्भ की, लेकिन वह बहुत दक्षिण में जाकर समुद्र तट पर निकला। उसका दल बहुत छोटा था। उसके पास केवल ४० सामान ढोने वाले थे, जिनमें से कुछ बम्बई से भरती किये गए हिन्दुस्तानी थे। उसके दल में कोई भी युरोपियन नहीं थे, क्योंकि लिविंगस्टोन को अन्य गोरों के साथ सफर करना बिलकुल पसंद नहीं था। उसका करीबी साथी एक नन्हा कुत्ता था, जिसका नाम था चिटेन।

हमेशा की तरह यात्रा धीमी गति से हो रही थी। उन्हें एक घने जंगल में रास्ता बना कर जाना पड़ा। और हिंदुस्तानी कुलियों को यात्रा से अधिक रूचि चीज़ें चुराने में थी। जब तक वे न्यासा झील तक पहुंचे, केवल १२ कुली ही बचे थे, और लिविंगस्टोन को फिर से पेचिश ने आ घेरा था। उसे अपने बाकी की ज़िन्दगी बीमारी में सफर करते ही बितानी थी।

हालात और भी ख़राब हो गए, जब उसका दवाइयों का डब्बा चोरी हो गया। क्नैन के बिना उसके पास मलेरिया की बीमारी से निजात पाने का कोई रास्ता नहीं था, जिसका होना लगभग तय ही था। उसका खाने-पीने का राशन बहुत कम रह गया था, और ऊपर से उसका प्यारा कुत्ता एक नदी को पार करते समय डूब कर मर गया। लेकिन लिविंगस्टोन की अदम्य इच्छाशक्ति के कारण अभियान जारी रहा, और समुद्र तट से चलने के एक वर्ष बाद वह तन्गान्यिका झील के दक्षिणी किनारे पर बसे एक गांव में जा पहुंचा।

लिविंगस्टोन के कुलियों पर जंगली भैंसों के एक झुण्ड का हमला।

कबीले का मुखिया चितापांगा बड़े आदर और रस्मो-रिवाज़ के साथ लिविंगस्टोन की अगवानी करते हुए।

गुलामी प्रथा के विरुद्ध विचारों के बावजूद, यहाँ उसने कुछ गुलामों के सौदागर अरबी लोगों से मदद स्वीकार की। उनसे मिले भोजन और दवाइयों के बिना शायद वह बुखार के कारण मर ही गया होता। उपचार के दौरान उसने पश्चिम में स्थित एक छोटी झील के बारे में सुना तो बहुत उत्साहित हो गया। आख़िरकार जब वह उस झील तक पहुंचा तो यह देख कर बहुत प्रसन्न हुआ कि उस झील के उत्तरी किनारे से एक चौड़ी नदी निकल रही थी। उसे लगा कि लुअलाबा नाम की यह नदी ही दशकों पुराने प्रश्न का सीधा सा उत्तर है। अगर यह उत्तर दिशा की ओर जा रही है, तो भला और कहां जाएगी, सिवाय अल्बर्ट झील के, जहाँ यह नील में तब्दील हो जायेगी।

बुखार के कारण कमज़ोर हुआ लिविंगस्टोन अफ़्रीकी मार्गदर्शकों के साथ यात्रा करते हुए।

गुलामों का कत्ले-आम

यह एक ऐसी भूल थी जो कोई भी आसानी से कर सकता था। भला लिविंगस्टोन को कैसे पता लगता कि लुअलाबा तो अल्बर्ट झील की ओर जाती ही नहीं, बल्कि तेज़ी से पश्चिम के ओर मुड़ कर कांगो नदी में तब्दील हो जाती है। लेकिन अब इस खोजी की सारी बची-खुची ऊर्जा और शक्ति अपनी इस परिकल्पना को सही साबित करने में जुट गई।

सबसे पहले तो लिविंगस्टोन को लुअलाबा के स्रोत का पता लगाना था। दक्षिण दिशा में जाकर उसे एक और अधिक बड़ी झील मिली, और उसने सोचा कि अवश्य यह झील ही महानद नील का स्रोत है। निश्चय ही, उसका अगला कदम था लुअलाबा का अनुसरण करना और यह निश्चय करना कि वह अल्बर्ट झील में ही जाकर मिलती है।

तन्गान्यिका झील के तट पर बसे उजीजी नगर का एक दृश्य। यहीं पर १८७२ में लिविंगस्टोन की मुलाकात स्टैनली से हुई थी।

लेकिन अब उसके पास भोजन और दवाओं की कमी गंभीर रूप ले चुकी थी, और मजबूरन उसे रास्ता बदल कर तन्गान्यिका झील के किनारे बसे उजीजी गांव का रुख करना पड़ा। उसे पता था कि वहां रसद उसका इंतज़ार कर रही थी।

बुखार और पेचिश के अलावा, अब लिविंगस्टोन के दाहिने फेफड़े में निमोनिया भी हो गया था, और खांसी के साथ उसके मुख से खून निकलने लगा था। उजीजी पहुँचने के आखिरी कुछ मील उसे स्ट्रेचर पर ले जाना पड़ा। लेकिन उजीजी में एक और आपदा उनका इंतज़ार कर रही थी। समुद्र तट से उनके लिए जो रसद भेजी गई थी, वह लूटी जा चुकी थी। चिट्ठियां, खाने-पीने का सामान, व्यापार सम्बन्धी चीज़ें, और सबसे महत्वपूर्ण - दवाइयां, ये सभी नदारद थीं।

यह एक कमर-तोड़ झटका था, लेकिन लिविंगस्टोन ने हार नहीं मानी। कुछ महीनों तक आराम करने के बाद वह लुअलाबा के किनारे स्थित गांव न्यांगवे को गया। यहाँ उसे एक बड़ा धक्का लगा जब उसने गुलामों के एक कत्ले-आम का दृश्य देखा।

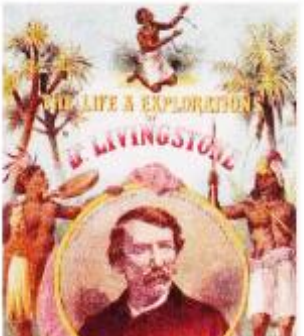

"डॉ. लिविंगस्टोन का जीवन और उनके खोज-अभियान" पुस्तक का मुखपृष्ठ।

अरब सौदागरों ने ५०० से भी अधिक गुलामों को मार डाला था, या वे मारे जाने के भय से नदी में डूब गए थे। लिविंगस्टोन ने लिखा : "मुझे ऐसा लगा कि मैं नर्क में पहुंच गया हूँ।"

एक प्रसिद्ध मुलाकात

उसकी इस रिपोर्ट और उसके द्वारा ब्रिटिश सरकार को भेजे गए अन्य संवादों से ब्रिटेन में इस अत्याचार के प्रति घनघोर विरोध की आवाज़ें उठने लगीं। यद्यपि ब्रिटेन ने अपने साम्राज्य में १८३३ में ही गुलामों की खरीद-फरोख्त पर पूर्ण पाबन्दी लगा दी थी, लेकिन गुलामों के बहुत से बाजार अभी भी चल रहे थे, और उन्हें जहाज़ों से इधर-उधर भेजा जा रहा था। लिविंगस्टोन के खुलासे के बाद ब्रिटेन ने जंजीबार के सुल्तान पर दबाव डाला, जिससे १८७३ में उसने अपने देश में गुलामों का बाजार बंद कर दिया।

थका हारा लिविंगस्टोन वापस उजिजि लौट आया। अब उसके पास कोई रसद नहीं बची थी, और उसे उन्हीं अरब व्यापारियों से मदद की भीख मांगनी पड़ी, जिनके गुलामों के धंधे की वह भर्तस्ना करता था। ऐसा लगने लगा था कि उसके पास अपना अभियान जारी रखने का कोई जरिया नहीं बचा था। लेकिन तभी उसे यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि एक गोरा व्यक्ति उजिजी आने वाला है। तीन दिन बाद बहुत धूम-धाम के बीच वह अजनबी वहां पहुंचा, और फटेहाल लिविंगस्टोन को देख कर उसने अभियानों के इतिहास में सबसे प्रसिद्ध ये शब्द कहे: "डॉक्टर लिविंगस्टोन, आप ही हैं न?"

यह गिरिजाघर जंजीबार में उस स्थान पर बनाया गया है, जहाँ कभी गुलामों का बाजार हुआ करता था।

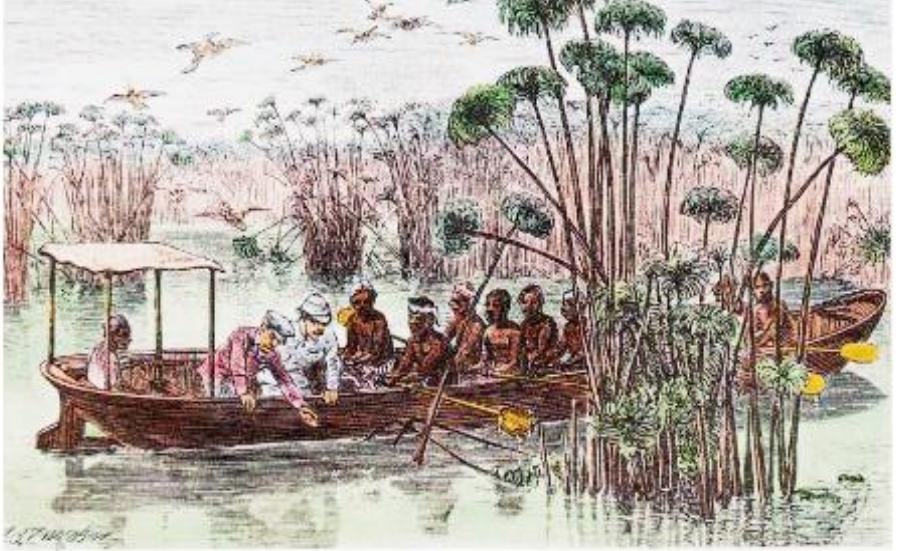

स्टैनली और लिविंगस्टोन तन्गान्यिका झील में यह खोज करते हुए कि एक नदी इस झील में आकर मिलती है।

वह अजनबी असल में एक पत्रकार हेनरी मॉर्गन स्टैनली था, जिसे यह पता लगाने के लिए अफ्रीका भेजा गया था कि लिविंगस्टोन अभी जीवित भी है या नहीं। स्टैनली की इस महत्वपूर्ण यात्रा, और उसके द्वारा भेजे गए लिविंगस्टोन के वर्णन ने इंग्लैंड में तहलका मचा दिया, और लिविंगस्टोन को एक बार फिर से लोगों की आँखों का सितारा बना दिया। उसके अभियान को पूरी आर्थिक सहायता दी गई, और जो कुछ भी उसे चाहिए था, मुहैया कराया गया।

लिविंगस्टोन को एक पालकी में चितंबो गांव ले जाया जा रहा है।

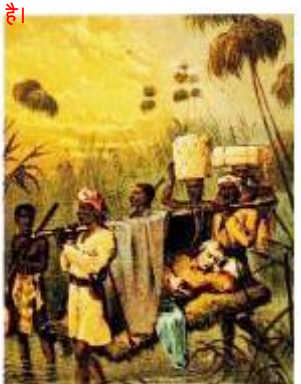

अंतिम अभियान

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि स्टैनली के आने से लिविंगस्टोन को अहसास हुआ कि दुनिया उसे भूली नहीं है, और उसका मन फिर उत्साह और उमंग से भर गया। जल्दी ही वह स्टैनली के बहुत करीब आ गया। शायद यह पहला गोरा आदमी था जिसके साथ उसका झगड़ा नहीं हुआ। दोनों ने साथ मिल कर तन्गान्यिका झील के उत्तरी इलाके की यात्रा की, जहाँ उन्होंने एक नदी देखी जो तन्गान्यिका झील में आकर मिल रही थी। यह इस बात का सीधा प्रमाण था कि तन्गान्यिका झील नील नदी का स्रोत नहीं हो सकती।

इस मानचित्र में चितंबो गांव की स्थिति दर्शाई गई है, जहाँ लिविंगस्टोन का देहांत हुआ।

हालाँकि १८७३ में जब स्टैनली वापस गया, तो लिविंगस्टोन को दुःख अवश्य हुआ, लेकिन अब उसने लुअलाबा नदी के अनुसरण अभियान का दृढ निश्चय कर लिया। कुछ समय उसे रसद और कुलियों के आने का इंतज़ार करना पड़ा, और तब वह एक बार फिर से नील का स्रोत ढूंढने दक्षिण की ओर चल पड़ा।

लेकिन वर्षों की कठिन यात्राओं, बीमारियों, और अनुचित खान-पान ने उसके शरीर को बहुत हानि पहुंचाई थी, और वह बहुत कमज़ोर हो गया था। झील की पूर्वी दिशा का इलाका बहुत दलदली और दुर्गम था, और प्रतिदिन वे मुश्किल से दो मील ही जा पाते। आख़िरकार वे चितंबो गांव पहुंच गए, लेकिन वहां पहुंच कर वह निढाल हो गया, और दो ही दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई।

उसके बचे-खुचे सहयोगियों ने उसके शव पर लेप लगा कर उसे संरक्षित किया और उसे वापस समुद्र तट पर ले आये, जहाँ उसे एक ब्रिटिश युद्ध पोत पर चढ़ा कर भेज दिया गया। इस महान खोज-कर्ता का अंतिम संस्कार एक महा-नायक की तरह किया गया, और उसे वेस्टमिनिस्टर ऐबी में दफना दिया गया, जहाँ उसकी समाधि आज भी देखी जा सकती है।

तिथियां और घटनाएं

१८१३ : लो ब्लांटायर, स्कॉटलैंड में डेविड लिविंगस्टोन का जन्म।
१८४० : लंदन मिशनरी सोसाइटी में दीक्षा के बाद दक्षिण अफ्रीका को प्रस्थान।
१८४९ : कालाहारी रेगिस्तान को पार करके नगामी झील की प्रथम यात्रा।
१८५६ : पूरे अफ्रीकी महादवीप को पार करने के बाद इंग्लैंड को वापसी।
१८५८ : अफ्रीका में ब्रिटेन के भ्रमणशील राजदूत के रूप में नियुक्ति, और ज़ंबेसी की खोज-यात्रा।
१८६४ : नील नदी के प्रश्न का अंतिम हल खोजने ने लिए सर रॉडरिक मुर्चिसन का लिविंगस्टोन को न्योता।
१८६५ : फोकस्टोन से लिविंगस्टोन की यात्रा प्रारम्भ।
१८६६ : जंजीबार में आगमन।
१८६८ : बंगविओलो झील की खोज।
१८६९ : उजिजी में आगमन।
१८७१ : गुलामों के भयावह कत्ले-आम पर लिविंगस्टोन का रोष। उजिजी में स्टैनली से मुलाकात।
१८७२ : अंतिम यात्रा पर प्रस्थान।
१८७३ : १ मई को बंगविओलो झील के किनारे स्थित चितंबो में देहांत।